OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 2 [Mar- Apr] Year 2026*

Research Article

ब्रिटिशकाल में भारतीय पत्रकारिता का विकास और स्वतंत्रता आंदोलन पर उसका निर्णायक प्रभाव

डॉ. राकेश मोहन नौटियाल [1], डॉ. पंकज पाण्डेय [2], डॉ. अमित चमोली [3*]

[1] सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय कमान्द, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एस डी एम् पी जी कॉलेज, डोईवाला, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

[3] सहायक आचार्य (विजिटिंग), इतिहास विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. अमित चमोली

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19754695

सारांश

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में भारतीय पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन में एक "दोहरी तलवार" और "राष्ट्रीय उत्प्रेरक" की भूमिका निभाई, जो केवल सूचना प्रसार का माध्यम नहीं, बल्कि क्रान्ति का उपकरण भी बनी । 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की के 'हिकिज बंगाल गजट' के साथ प्रेस का श्रीगणेश हुआ, जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी की कटु आलोचना करके प्रेस की स्वतंत्रता के लिए पहली गंभीर लड़ाई को चिह्नित किया । राजा राम मोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' और 'मिरात-उल-अखबार' जैसे पत्रों के माध्यम से सामाजिक-धार्मिक सुधारों (सती प्रथा, मूर्ति पूजा आदि के खिलाफ) का व्यापक अभियान चलाया ।19वीं सदी के मध्य में भाषाई पत्रकारिता का तेजी से विकास हुआ, जिसने मीडिया की लगाम आम जनता तक पहुंचाई और राष्ट्रीय चेतना को क्षेत्रीय स्तर पर व्यापक बनाया । दादाभाई नौरोजी ने 'ड्रेन थ्योरी' को लोकप्रिय बनाने के लिए पत्रकारिता का उपयोग किया, जिससे ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना शुरू हुई । बाल गंगाधर तिलक ने 'केसरी' और 'द मराठा' के माध्यम से स्वराज की भूख पैदा की और साधारण लोगों की दशा को प्रमुखता से प्रकाशित किया, जिससे उन्हें 'लोकमान्य' की उपाधि मिली । राष्ट्रवादी प्रेस के उत्कर्ष के जवाब में, ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी कानून लागू किए, जिनमें 1878 का वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (VPA) और 1910 का भारतीय सामाचार पत्र अधिनियम शामिल थे, जिन्हें जनता के तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा । महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' के माध्यम से सत्य, अहिंसा और सेवा के आदर्शों का प्रचार किया, जिससे असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों को अभूतपूर्व जनसमर्थन मिला । डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 'मूकनायक' और 'बहिष्कृत भारत' जैसी पत्रिकाएँ शुरू करके शोषित और पीड़ित आवाज़ को शक्ति दी और 'स्वतंत्रता' का अर्थ सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित किया । इस प्रकार, ब्रिटिश काल की पत्रकारिता ने प्रतिरोध की लौ को प्रज्वलित रखा और स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान करते हुए आधुनिक भारतीय लोकतंत्र के लिए एक अमूल्य विरासत छोड़ी ।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-03-2026
- **Accepted:** 18-04-2026
- **Published:** 25-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 822-828
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

नौटियाल र , पाण्डेय पं , चमोली अ. ब्रिटिशकाल में भारतीय पत्रकारिता का विकास और स्वतंत्रता आंदोलन पर उसका निर्णायक प्रभाव. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):822-828.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: स्वतत्रता आन्दोलन, पत्रकारिता, राष्ट्रीयता, प्रेस, समाचार-पत्र, सामाजिक सुधार, प्रतिबंधित साहित्य

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

प्राक्कथन एवं प्रारंभिक उद्भव (1780-1820)

पत्रकारिता—एक दोहरी तलवार

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रेस ने एक शक्तिशाली और प्रभावशाली भूमिका निभाई । यह केवल समाचार और विचारों का माध्यम नहीं था, बल्कि जन जागरण और क्रान्ति का उपकरण भी बना । प्रेस ने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों को उजागर करने और भारतीय जनता को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय पत्रकारिता का उद्भव एक जटिल घटना थी, जो न केवल सूचना प्रसार का माध्यम बनी, बल्कि औपनिवेशिक शक्ति के नियंत्रण और भारतीय राष्ट्रीय चेतना के बीच एक सतत संघर्ष का प्रतीक भी थी। पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन के लिए एक 'युद्धक्षेत्र' (जहाँ ब्रिटिश दमनकारी नीतियों का सामना किया गया) और 'जन शिक्षण का मंच' दोनों का कार्य किया। इसने एक ऐसी साहसी परंपरा की नींव रखी, जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई को वैचारिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया।

यह पत्रकारिता, अपने प्रारंभिक चरण में, अंग्रेजी शासन की नीतियों पर सवाल उठाकर औपनिवेशिक नियंत्रण की नींव को चुनौती देने वाली पहली संस्था थी। यह संघर्ष, 1780 में अपनी स्थापना से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक, भारतीय राजनीति का एक केंद्रीय तत्व बना रहा, जिससे पत्रकारिता की भूमिका केवल समाचार प्रदाता की नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्प्रेरक की सिद्ध हुई[i] ।

1.1. भारत में प्रेस का श्रीगणेश: ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध प्रारंभिक विरोध

भारत में मुद्रित समाचार पत्र का इतिहास 29 जनवरी 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित 'हिकिज *बंगाल गजट और दि ओरिजिनल कैलकटा जनरल एडवरटाईजर*' के साथ शुरू हुआ[ii]। यह पत्र भारत में पहला मुद्रित समाचार पत्र था। हिक्की का लेखन अत्यंत निर्भीक और निडर था। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक और वाणिज्यिक नीतियों की कटु आलोचना की। विशेष रूप से, उन्होंने तत्कालीन गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स और मुख्य न्यायाधीश सर एलिज़ा इम्पे को अपने लेखन का निशाना बनाया। पादरी वर्ग और कलकत्ता के पहले एंग्लिकन बिशप जॉन जकारिया की लालचपूर्ण कार्यों की आलोचना करके उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि प्रेस की निष्पक्षता का अर्थ शासक वर्ग के सभी अंगों की आलोचना करना है। ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस आलोचना को अपनी निजी संपत्ति—भारतीय क्षेत्रों—में 'हस्तक्षेप करने वाला और अतिचारी' माना[iii] । हिक्की पर निजी अभियोग लगाया गया और अंततः उन्हें प्रकाशन बंद करने के लिए मजबूर कर दिया गया। मार्च 1782 में, इस समाचार पत्र को शुरुआत में ही खत्म कर दिया गया। इस घटना ने भारत में प्रेस की स्वतंत्रता (फ्री प्रेस) के लिए पहली गंभीर लड़ाई को चिह्नित किया, जिसकी नींव हिक्की ने अकेले ही अपने संघर्ष से रखी । उन्होंने जोर देकर कहा था कि प्रेस की स्वतंत्रता एक स्वतंत्र राजपत्र/गजट के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, और इसे दमन करना अत्याचारी और समाज के लिए हानिकारक है ।

यह प्रारंभिक दमन स्पष्ट करता है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता ने पत्रकारिता को शुरू से ही एक नागरिक अधिकार के रूप में नहीं देखा। भले ही *बंगाल गजट* अंग्रेजी में था और एंग्लो-समुदाय के लिए संपादित किया गया था, दमन का कारण सामग्री की भाषा या लक्षित दर्शक नहीं थे, बल्कि 'आलोचना' का मात्र अस्तित्व था। सत्ता के इस दृष्टिकोण ने बाद के दमनकारी कानूनों जैसे वर्नाकुलर प्रेस एक्ट का वैचारिक आधार निर्मित किया, जहाँ प्रेस को हमेशा एक संप्रभु खतरे के रूप में देखा गया।

1.2. उत्तराधिकारी पत्रों का स्वरूप और सरकारी नियंत्रण

1780 से 1793 के बीच कलकत्ता, मद्रास और बंबई में कई पत्र शुरू हुए, जिनमें 1784 में *कलकत्ता गजट*, 1785 में *बंगाल जर्नल*, 1788 में *मद्रास कूरियर*, और 1787 में *बॉम्बे हेराल्ड* शामिल थे । इन पत्रों ने हिक्की के अनुभव से सबक लिया। वे सरकार, उसके अधिकारियों और नीतियों की आलोचना से खुद को दूर रखते थे। उनके संपादकीय सामान्य तौर पर जनसाधारण/पब्लिक को दिलचस्पी नहीं लेते थे, और वे मुख्यतः सरकारी आदेश, भारतीय समाचार, फैशन नोट्स और ब्रिटिश अख़बारों के उद्धरण प्रकाशित करते थे [3]। इन पत्रों ने 'गैर-विवादास्पद' और 'गैर-राजनीतिक चरित्र' बनाए रखने की कोशिश की। परिणाम यह हुआ कि कुछ पत्रों को सरकार का समर्थन भी प्राप्त हुआ। इसके बावजूद, सरकार अत्यंत सतर्क थी। उदाहरण के लिए, *बॉम्बे गजट* को प्रकाशन से पहले प्रत्येक अंक को सेंसरशिप (अभिवेचन) के लिए प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था ।

2. सामाजिक-धार्मिक सुधार और भाषाई पत्रकारिता का उदय (1820-1885)

2.1. राजा राम मोहन राय और नवजागरण की पत्रकारिता

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में पत्रकारिता ने अपनी दिशा बदली और सामाजिक तथा धार्मिक सुधारों का माध्यम बनी। राजा राम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत और आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है[iv] । उन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक रूढ़िवाद के दुष्चक्र में फँसे भारतीय समाज को दिशा प्रदान की[v] । भारतीय भाषाओं में पहला पत्र 'दिग्दर्शन' था जो बंगला में 1818 में जे0 सी0 मार्शमन के द्वारा प्रकाशित किया गया, जो भविष्य में समाचार दर्पण के नाम से साप्ताहिक के रूप में छपने लगा। राजा राममोहन राय ने 1821 में बंगाली में *संवाद कौमुदी* और फारसी में पहला साप्ताहिक *मिरात-उल-अखबार* प्रकाशित किया[vi] । वर्षों बाद राजा राममोहन राय ने बांग्ला, हिंदी, फ़ारसी और अंग्रेजी में बंगदूत शुरू किया। उनकी पत्रकारिता ने आत्मीय सभा (1814) और बाद में ब्रह्म समाज (1828) द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों को सही दिशा दिखाने का काम किया । उन्होंने इन माध्यमों का उपयोग करके सती प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, मूर्ति पूजा, और जातिगत कठोरताओं जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक व्यापक अभियान चलाया, जिससे समाज में 'बाहरी दुनिया के बारे में जागरूकता' और सुधार के संकल्प को मजबूती मिली । उन्होंने 'तर्क' और 'वेद/उपनिषद' के जुड़वाँ स्तंभों पर आधारित एकेश्वरवाद का प्रचार किया[vii] । राय ने 1823 के प्रेस अध्यादेश के खिलाफ आवाज उठाई, जिसने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए कानूनी संघर्ष की शुरुआत की। उनकी पत्रकारिता ने यह सुनिश्चित किया कि स्वतंत्रता आंदोलन की नींव केवल राजनीतिक शिकायतों तक सीमित न रहे, बल्कि सामाजिक मुक्ति और धार्मिक सुधार जैसे आवश्यक वैचारिक स्तंभों पर भी खड़ी हो।

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2.2. भाषाई प्रेस का विस्तार और राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण

हालांकि भारत में शुरुआती पत्र अंग्रेजी में थे, 19वीं शताब्दी के मध्य तक भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता का तेजी से विकास हुआ। हिंदी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, बांग्ला, असमिया और दक्षिण भारतीय भाषाओं के अखबारों ने इस नई परिस्थिति का लाभ उठाया, जिससे मीडिया की लगाम धीरे-धीरे अंग्रेजी प्रेस के हाथों से हटकर आम जनता तक पहुँचने लगी । इस अवधि में सामाजिक सुधारकों ने भी अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए पत्रिकाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग किया। उदाहरण के लिए, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके हिन्दू धर्म में व्याप्त बुराइयों (जैसे मूर्तिपूजा) को दूर करने का प्रयास किया और *वेदों की ओर लौटो* का नारा दिया[viii] । भाषाई प्रेस ने इन सुधार आंदोलनों के संदेशों को क्षेत्रीय स्तर पर व्यापक बनाया। पत्रकारिता के इस चरण ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक बहु-आयामी नींव रखी। जहां राजा राम मोहन राय ने सामाजिक-धार्मिक दोषों को उजागर किया, वहीं दादाभाई नौरोजी जैसे नेताओं ने आर्थिक शोषण पर ध्यान केंद्रित किया। इस प्रकार, पत्रकारिता ने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग नहीं की, बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन के लिए सामाजिक मुक्ति, आर्थिक न्याय और राजनीतिक जागरूकता के वैचारिक आधार स्थापित किए।

2.3. प्रेस का प्रथम चरण: संवैधानिक निष्ठा से प्रारंभिक आलोचना की ओर (1860 के बाद)

1860 के दशक के बाद, राष्ट्रवादी पत्रों ने ब्रिटिश शासन की आर्थिक और प्रशासनिक नीतियों की प्रारंभिक आलोचना शुरू कर दी, यद्यपि यह आलोचना संवैधानिक दायरे में रहती थी।

- **आर्थिक आलोचना:** दादाभाई नौरोजी, जिन्हें "भारत के वयोवृद्ध पुरुष" कहा जाता है[ix] , ने 1883 में *वॉयस ऑफ इंडिया* शुरू किया[x] । वह एक प्रमुख अर्थशास्त्री थे और उन्होंने अपनी पत्रिकाओं का उपयोग ब्रिटिश शासन की व्यवस्थित आर्थिक आलोचना—विशेष रूप से 'ड्रेन थ्योरी'—को लोकप्रिय बनाने के लिए किया[xi] ।
- **प्रारंभिक राष्ट्रवादी पत्र:** जी. सुब्रमण्यम अय्यर ने 20 सितम्बर, 1878 में अंग्रेजी भाषा के पत्र *द हिन्दू*[xii] की स्थापना की, जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आलोचना की ।
- शिशिर कुमार घोष और मोती लाल घोष ने 1868 में *अमृत बाज़ार पत्रिका* शुरू की । यह पत्रिका जल्द ही राष्ट्रवादी भावना का एक प्रमुख केंद्र बन गई[xiii]।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के पहले सत्र (1885) से पहले ही, पत्रकारिता ने यह सुनिश्चित कर दिया था कि जनमत केवल राजनीतिक शिकायतों तक सीमित न रहकर, समाज के हर वर्ग की समस्याओं—सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक—से अवगत हो चुका है।

3. राष्ट्रवादी पत्रकारिता का उत्कर्ष और औपनिवेशिक दमन (1885-1918)

3.1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) और प्रेस की वैचारिक भूमिका

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन के बाद, प्रेस की भूमिका औपचारिक रूप से राष्ट्रवादी आंदोलन से जुड़ गई। कांग्रेस के शुरुआती नेतृत्व, जिसमें दादाभाई नौरोजी और व्योमेश चंद्र बनर्जी शामिल थे, ने संवैधानिक और उदारवादी दृष्टिकोण की वकालत की । उनके लिए, समाचार पत्र जनता को शिक्षित करने, राष्ट्रीय एकता स्थापित करने और ब्रिटिश संसद तक अपनी मांगों को पहुँचाने का मुख्य उपकरण थे। पत्रकारिता ने 72 प्रतिनिधियों से शुरू हुए कांग्रेस के एजेंडे को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया, जिससे आंदोलन को व्यापक आधार मिला।

3.2. उग्र राष्ट्रवादी प्रेस: स्वराज, स्वदेशी और बलिदान

20वीं सदी के प्रारंभ में, बाल गंगाधर तिलक जैसे उग्रवादी नेताओं के उदय के साथ पत्रकारिता का लहजा और अधिक कटु और निर्भीक हो गया।

बाल गंगाधर तिलक की पत्रकारिता

तिलक की पत्रकारिता ने 20वीं सदी के प्रारंभ में स्वराज (स्व-शासन) की भूख पैदा की और समूची सांस्कृतिक संवेदना को प्रभावित किया[xiv] ।

जन जागरण: तिलक ने *केसरी* (मराठी) और *द महरत्ता* (साप्ताहिक अंग्रेजी, 1881) [xv] का संपादन किया। *केसरी* ब्रिटिश शासन की कठोर आलोचना के लिए प्रसिद्ध था[xvi] ।

1. **साधारण लोगों की दशा:** *केसरी* के माध्यम से तिलक ने सामाजिक, राजनीतिक और व्यापारिक समाचारों के साथ-साथ देश के साधारण लोगों की दशा को प्रमुखता से प्रकाशित करने का निर्णय लिया। अखबार के प्रथम पृष्ठ पर हिंदुस्तानियों के हित को सुनिश्चित करने की प्रतिज्ञा भी प्रकाशित की जाती थी [xvii]।
2. **स्वदेशी का प्रचार:** उन्होंने स्वराज को स्वदेशी (आत्मनिर्भरता) से जोड़कर लोगों को जागरूक करने का कार्य किया । तिलक अपनी पत्रकारिता को 'किसी के प्रभाव में नहीं' आने देते थे । उनके निर्भीक लेखन के कारण उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा, जिसने उन्हें 'लोकमान्य' के रूप में स्थापित किया[xviii]।

अन्य राष्ट्रवादी आवाज़ें

- **अमृत बाज़ार पत्रिका:** शिशिर कुमार घोष और मोती लाल घोष द्वारा स्थापित इस पत्रिका ने निर्भीक लेखन जारी रखा। ब्रिटिश सरकार ने 1919 में इसके दो संपादकीयों ('टु हूम डज इण्डिया बिलांग?' और 'अरेस्ट ऑफ मिस्टर गांधी : मोर आउटरेजेज?') के कारण इसकी जमानत (डिपॉजिट) राशि जब्त कर ली[xix] ।
- **लाला लाजपत राय:** 'पंजाब केसरी' के रूप में विख्यात, उन्होंने राष्ट्रवादी पत्रिका *द पीपुल* की स्थापना की, जो जनमत को संगठित करने में महत्वपूर्ण थी[xx] ।

3.3. दमनकारी प्रेस अधिनियमों का युग (Press Acts)

राष्ट्रवादी प्रेस के उत्कर्ष के प्रतिक्रियास्वरूप, ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी कानूनों का सहारा लिया। प्रसिद्ध पत्रकार स्वर्गीय हेमेन्द्र प्रसाद घोष के अनुसार, सरकार समाचार पत्रों के प्रति हमेशा आशंकित रहती थी और मामूली कारणों से स्वतंत्रता पर प्रहार करने को तत्पर रहती थी[xxi] ।

दमन की चक्रीय प्रकृति

ब्रिटिश सरकार का दमनकारी दृष्टिकोण लचीलापन और कठोरता के बीच एक चक्रीय प्रकृति को दर्शाता था।

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. **वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, 1878 (VPA)**: गवर्नर जनरल लॉर्ड लिटन द्वारा लागू यह अधिनियम स्थानीय भाषा के समाचार-पत्रों पर पूर्व-सेंसरशिप अनिवार्य करने के लिए लाया गया था। इसे भारतीय सामाचार पत्रों की 'असहमति की आवाज़ को दबाने' का प्रयास माना गया [xxii]। यह एक्ट लॉर्ड लिटन और राज्य सचिव लॉर्ड सलिसबरी के बीच एक गोपनीय गठजोड़ का परिणाम था ।
2. **विरोध और निरस्तीकरण:** इस एक्ट की व्यापक रूप से आलोचना हुई। जनता के तीव्र विरोध के कारण, इंग्लैंड में सत्ता परिवर्तन के बाद लॉर्ड रिपन ने 1881 में इसे रद्द कर दिया [xxiii]। (ध्यान दें कि लॉर्ड बेंटिक ने भी कानून में लचीलापन दिखाया था , लेकिन यह लचीलापन केवल अस्थायी था।)
3. **कठोरता का पुनर्जीवन (1908 और 1910):** जैसे ही उग्र राष्ट्रवाद और स्वदेशी आंदोलन बढ़े, सरकार ने दमन की पुरानी रणनीति को पुनर्जीवित कर दिया। 1908 के न्यूज़पेपर्स एक्ट ने मजिस्ट्रेटों को मुद्रणालयों को जब्त करने का अधिकार दिया[xxiv] । इसके बाद, 1910 में भारतीय सामाचार पत्र अधिनियम लाया गया, जिसने वर्नाकुलर प्रेस एक्ट से संबंधित सभी घिनोने प्रावधानों को पुनर्जिवित कर दिया[xxv] ।

यह चक्रीय दमन स्पष्ट करता है कि ब्रिटिश राज ने प्रेस की स्वतंत्रता को एक मूलभूत सिद्धांत नहीं, बल्कि एक अस्थाई विशेषाधिकार माना। जैसे ही राष्ट्रवादी खतरा बढ़ा, दमनकारी प्रावधानों को तुरंत पुनर्जीवित कर दिया गया, जिससे राष्ट्रवादी प्रेस को कानूनी युद्ध की स्थिति में लगातार लड़ना पड़ा।

तालिका 3.3: ब्रिटिश काल के प्रमुख दमनकारी प्रेस अधिनियम

अधिनियम का नाम	वर्ष	गवर्नर जनरल	प्रमुख प्रावधान	परिणाम
वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (VPA)	1878	लॉर्ड लिटन	स्थानीय भाषा के पत्रों पर पूर्व-सेंसरशिप; मजिस्ट्रेट को अंतिम शक्ति।	व्यापक विरोध के कारण 1881 में लॉर्ड रिपन द्वारा निरस्त।[xxvi]
भारतीय सामाचार पत्र अधिनियम	1910	अज्ञात	VPA 1878 के प्रावधानों को पुनर्जीवित किया गया।	भारतीय पत्र-पत्रिकाओं पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया गया।[xxvii]

4. जन आंदोलन और पत्रकारिता की सर्वोच्च भूमिका (1919-1947)

4.1. महात्मा गांधी: पत्रकार, संपादक और जन-संचार माध्यम

राष्ट्रवादी आंदोलन के अंतिम और सबसे प्रभावी चरण में, महात्मा गांधी ने पत्रकारिता को जन लामबंदी और सत्य के प्रसार का एक शक्तिशाली माध्यम बनाया। भारतीय पत्रकारिता अपनी जीवन शक्ति, महत्व और प्रभाव को एक महान कारक के कारण मानती है- इसके महानतम पत्रकार वाले व्यक्ति थे, बौद्धिक रूप से अत्यधिक सुस्सज्जित व्यक्ति, शक्तिशाली लेखक, सक्षम विवादास्पद और महान व्यक्ति थे । सत्यनिष्ठा और साहस । ऐसे पत्रकारों में से एक थे महात्मा गांधी, जिन्होंने पूरण स्वतंत्रता के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समाचार पत्रों कि शुरुआत की और उनका उपयोग किया । स्वतंत्रता के अहिंसक संघर्ष में राष्ट्रवादी समाचार पत्र गांधी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले । 40 वर्षों तक उन्होंने साप्ताहिक समाचार पत्रों का सम्पादन और प्रकाशन किया । वह उस समय अपने उच्च प्रसार वाले समाचारपत्रों के साथ बड़ी संख्या में भारतीयों तक पहुंचे, जब जनसंचार माध्यम सिमित थे[xxviii]। गांधी की पत्रकारिता के आदर्श सत्य, अहिंसा, और सेवा पर आधारित थे।

सामाजिक और राजनीतिक संदेश का प्रचार

- **यंग इंडिया और हरिजन:** गांधीजी ने इन पत्रिकाओं का उपयोग केवल राजनीतिक विरोध के लिए नहीं, बल्कि गहन सामाजिक परिवर्तन के लिए किया। उन्होंने *हरिजन* के माध्यम से अस्पृश्यता (छुआछूत) के दाग को मिटाने का प्रयास किया, जिसे उन्होंने 'भगवान और मनुष्य के खिलाफ एक पाप' बताया, जो हिंदू धर्म के जीवन को धीरे-धीरे खा रहा था[xxix] ।
- उन्होंने महिलाओं के बलिदान और ज्ञानोदय पर भारत की मुक्ति की निर्भरता जैसे विषयों पर प्रचुर मात्रा में लिखा, साथ ही चरखा को लोकप्रिय बनाया[xxx] ।

असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में भूमिका

गांधी की पत्रकारिता ने असहयोग आंदोलन (4 सितंबर 1920 से शुरू) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (4 मार्च 1930 से शुरू)[xxxi] को अभूतपूर्व जनसमर्थन प्रदान किया।

- **सविनय अवज्ञा आंदोलन:** इस आंदोलन के दौरान, समाचार पत्रों ने नमक यात्रा (दांडी मार्च, 12 मार्च 1930 – 6 अप्रैल 1930)[xxxii] और ब्रिटिश नमक कानूनों के उल्लंघन पर विस्तृत रिपोर्टिंग की । लगभग 25 दिन तक चली इस यात्रा और गांधी के संदेश को समाचार पत्रों ने व्यापक रूप से प्रकाशित किया, जिससे संपूर्ण देश में अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में व्यापक जन संघर्ष का जन्म हुआ । इस आंदोलन में हजारों सत्याग्रहियों को जेल जाना पड़ा। सरकार ने नागरिक स्वतंत्रता रद्द कर दी और कांग्रेस संगठनों पर प्रतिबंध लगाने के अध्यादेश जारी किए (1931 के अंत में), ताकि कांग्रेस को सुरक्षात्मक लड़ाई के लिए मजबूर किया जा सके [xxxiii]। इसके बावजूद, प्रेस ने संघर्ष की भावना को बनाए रखा।

4.2. वंचितों और अल्पसंख्यकों की आवाज़

बीसवीं सदी की पत्रकारिता ने न केवल राजनीतिक एकता पर ध्यान केंद्रित किया, बल्कि सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व के मुद्दों को भी सशक्त ढंग से उठाया।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर और दलित चेतना

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर जानते थे कि देश में स्थापित पत्र-पत्रिकाएं आमतौर पर पूंजीपति मालिकों के हितों का रक्षण करती हैं[xxxiv] । इसलिए, उन्होंने शोषित और पीड़ित आवाज़ को बल और शक्ति देने के लिए पत्रकारिता का माध्यम चुना[xxxv] ।

- **प्रमुख पत्रिकाएँ:** 1920 में उन्होंने साप्ताहिक मूकनायक शुरू किया (जिसे कोल्हापुर नरेश छत्रपति राजर्षि शाहू महाराज ने आर्थिक सहयोग दिया) । इसके बाद, 1927 में मराठी पाक्षिक बहिष्कृत भारत और 1930 में साप्ताहिक जनता का संपादन शुरू हुआ। वह अंग्रेजी पत्रिका इक्वलिटी का भी संपादन करते थे [xxxvi] ।

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- **पत्रकारिता सिद्धांत:** अंबेडकर पत्रकारिता में नैतिकता को रीढ़ की हड्डी मानते थे। उनका लेखन निर्भीकता, निष्पक्षता, और दबे-कुचले जीवन के प्रति करुणा के भाव से ओतप्रोत था । *मूकनायक* से लेकर *प्रबुद्ध भारत* तक का उनका सफर सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन का आलेख रहा है, जिसने सदियों के अंधेरे को दूर करने का प्रयास किया [xxxvii]।

इस संदर्भ में यह समझना महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय पत्रकारिता एकध्रुवीय नहीं थी। जहां गांधी जी *हरिजन* के माध्यम से हिंदू समाज में छुआछूत पर लड़ रहे थे , वहीं अंबेडकर ने *मूकनायक* के माध्यम से दलितों की मुक्ति की वकालत की । अंबेडकर की पत्रकारिता ने यह सुनिश्चित किया कि 'स्वतंत्रता' का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय भी हो, इस प्रकार इसने राष्ट्रीय आंदोलन की व्यापकता को बढ़ाया।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एक विद्वान और स्वतंत्रता सेनानी थे, जो हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक रहे [26]। उनकी पत्रिका अल-हिलाल ने उन्हें खिलाफत आंदोलन और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में स्थापित किया [xxxviii]। जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें एक 'प्रखर बुद्धि वाला और मेधावी व्यक्ति' बताया था, जिसकी निःस्वार्थ सेवा राष्ट्र को सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी [xxxix]।

4.3. स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता का अंतिम योगदान

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता ने हर मौके पर ब्रिटिश विरोधी भावना को बढ़ाने का कार्य किया[xl] । जब अधिकांश कांग्रेस नेतृत्व को जेल में डाल दिया गया था (विशेषकर 1930 के दशक और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान), प्रेस (चाहे भूमिगत हो या मुख्यधारा का) ने आंदोलन की कमान संभाली, नेतृत्व के विचारों को प्रसारित किया और प्रतिरोध की लौ को प्रज्वलित रखा।

तालिका 4.3: प्रमुख जन आंदोलन और पत्रकारिता का योगदान

आंदोलन/लक्ष्य	समय अवधि	प्रमुख पत्रिकाएँ/संपादक	पत्रकारिता द्वारा योगदान
सामाजिक-धार्मिक सुधार	1820-1880	मिरात-उल-अखबार, संवाद कौमुदी (राय)	सती, जाति व्यवस्था और अंधविश्वासों के खिलाफ जनमत निर्माण।
स्वराज/स्वदेशी आंदोलन	1905-1910	केसरी (तिलक), अमृत बाजार पत्रिका	राष्ट्रबोध की चेतना साधारण लोगों की दशा पर ध्यान केंद्रित करना है।
दलित/सामाजिक मुक्ति आंदोलन	1920-1947	मूकनायक, बहिष्कृत भारत (अंबेडकर)	शोषितों की मुक्ति, सामाजिक समानता का एजेंडा स्थापित करना।
सविनय अवज्ञा आंदोलन	1930-1934	यंग इंडिया, हरिजन (गांधी)	अहिंसक सत्याग्रह के सिद्धांतों का प्रचार, जन लामबंदी (दांडी मार्च का व्यापक प्रकाशन)।

5. निष्कर्ष, निहितार्थ और संदर्भ

5.1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का समग्र प्रभाव

ब्रिटिश काल में पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक अपरिहार्य शक्ति के रूप में कार्य किया। इसने जनमत को संगठित करने में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाई, जो केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें सामाजिक सुधार और ब्रिटिश आर्थिक शोषण (जैसे दादाभाई नौरोजी की ड्रेन थ्योरी) की व्यवस्थित आलोचना भी शामिल थी । पत्रकारिता का सबसे बड़ा योगदान राष्ट्रीय एकता के विकास में रहा। भाषाई पत्रकारिता के उदय ने क्षेत्रीय जागरूकता को राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जोड़ा, जिससे आंदोलन भारत के कोने-कोने तक पहुँचा। यह आंदोलन को वैचारिक नेतृत्व प्रदान करने में भी सफल रही। बाल गंगाधर तिलक , महात्मा गांधी , लाला लाजपत राय , और डॉ. बी.आर. अंबेडकर जैसे नेतृत्वकर्ताओं के विचारों को देशव्यापी वितरण मिला।

पत्रकारिता ने लगातार सरकारी दमन का सामना करते हुए प्रतिरोध की भावना को जीवित रखा। औपनिवेशिक सरकार की प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रहार करने की तत्कालीन सनक के बावजूद, पत्रकारों ने 1910 अधिनियम जैसे दमनकारी कानूनों का निर्भीक प्रतिरोध किया। पत्रकारिता का संघर्ष केवल संपादकीय सामग्री प्रकाशित करने का नहीं था, बल्कि यह संघर्ष जनहित सुनिश्चित करने और सत्ता की आलोचना करने के लिए 'किसी के प्रभाव में नहीं आने' के सिद्धांत को स्थापित करने का था ।

भारतीय प्रेस ने स्वतंत्रता आन्दोलन में एक प्रमुख भूमिका निभाई । यह केवल समाचार का माध्यम नहीं था, बल्कि एक ऐसा मंच था जिसने भारतीय समाज में जागरुकता और राष्ट्रीयता की भावना को प्रज्वलित किया । प्रेस ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम के विचारों को जनता तक पहुंचाया, बल्कि ब्रिटिश शासन की नीतियों और अत्याचारों को उजागर किया । परें ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय नेताओं के विचारों को प्रसारित करने और आंदोलनों को समर्थन देने में महत्वपूरण भूमिका निभाई । बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, मौलाना आजाद जैसे नेताओं ने प्रेस का उपयोग अपने विचारों और क्रांतिकारी संदेशों को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए किया । केसरी, यंग इण्डिया, अमृत बाज़ार पत्रिका और अल हिलाल जैसे अखबारों ने राष्ट्रीयता, स्वदेशी और सामाजिक सुधार के विचारों को व्यापक समर्थन दिलाया । प्रेस ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भागीदारी के साथ साथ सामाजिक सुधार में भी योगदान दिया । जाति प्रथा, महिला शिक्षा और अस्पर्श्यता जैसे मुद्दों पर जागरुकता फैलाकर प्रेस ने समाज को प्रगतिशील दिशा में प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रेस ने लोकतंत्र कि मजबूती सरकारी जवाबदेही और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में भी योगदान दिया । भारतीय प्रेस ने केवल स्वतंत्रता संग्राम कि धरोहर है, बल्कि यह भारत के लोकतात्रिक और सामाजिक विकास की नींव भी है । इसने विचारों की स्वतंत्रता, समाज सुधार और राष्ट्रीय एकता को बढावा देकर भारतीय समाज को सशक्त और संगठित करने में अद्वितीय योगदान दिया ।

5.2. औपनिवेशिक विरासत और आधुनिक भारतीय पत्रकारिता पर इसके निहितार्थ

ब्रिटिश काल की पत्रकारिता ने आधुनिक भारतीय पत्रकारिता के लिए एक अमूल्य विरासत छोड़ी है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्थापित पत्रकारिता के आदर्श—सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, शोषितों के प्रति करुणा, और सामाजिक न्याय की वकालत—आज भी भारतीय लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की आधारशिला बने हुए हैं । इस काल ने यह सिद्ध किया

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कि लोकतंत्र में प्रेस का प्राथमिक कार्य सत्ता से सवाल पूछना और जनभागीदारी को प्रोत्साहित करना है।

REFERENCES

[i] नौटियाल, राकेश मोहन एव अमित चमोली : **भारतीय प्रेस और ब्रिटिश नीति– एक अवलोकन, पुरुकला, Vol-31-Issue-39-May-2020, ISSN:0971-2143, पेज संख्या : 426–433.** https://www.researchgate.net/publication/353924432_indian_press_and_british_policiesek_avlokan

[ii] रावत, जयसिंह : स्वाधीनताआन्दोलन में उत्तराखंड की पत्रकारिता, विनसर पब्लिशिंग कं0, देहरादून–उत्तराखंड (2015), पेज संख्या – 33.

[iii] https://m.sahityakunj.net/entries/view/aupaniveshik-bharat-mein-patrakaaritaa-aur-raajniti#google_vignette

[iv] कुमार, नरेंद्र : भारतीय नवजागरण का अग्रदूत-राजा राममोहन राय, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540, पेज संख्या : 1280-1282.

[v] कुमारी, मंजू : राजा राममोहन राय और पत्रकारिता, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), JETIR July 2018, Volume 5, Issue 7, ISSN-2349-5162, पेज संख्या : 136-137.

[vi] रावत, जयसिंह : स्वाधीनताआन्दोलन में उत्तराखंड की पत्रकारिता, विनसर पब्लिशिंग कं0, देहरादून–उत्तराखंड (2015), पेज संख्या – 33.

[vii] कुमार, नरेंद्र : भारतीय नवजागरण का अग्रदूत-राजा राममोहन राय, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540, पेज संख्या : 1280-1282.

[viii] चौधरी, गोपाल एवं डॉ. दिनेश मंडोत, आर्य समाज का 19 वीं शताब्दी सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधार के कदम के रूप में, AIRO Journal, Vol 3 (1), July 2024, ISSN 2320-3714, पेज–76–89.

[ix] लाल, कृष्ण : दादा भाई नौरोजी के विचारों का विश्लेषण अध्ययन, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org, Volume 12, Issue 11 November 2024 | ISSN: 2320-2882, पेज संख्या - h567-h575.

[x] https://www.researchgate.net/publication/348915834_The_Promise_of_India_Recalling_Dadabhai_Naoroji

[xi] लाल, कृष्ण : दादा भाई नौरोजी के विचारों का विश्लेषण अध्ययन, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org, Volume 12, Issue 11 November 2024 | ISSN: 2320-2882, पेज संख्या - h567-h575.

[xii] रावत, जयसिंह : स्वाधीनताआन्दोलन में उत्तराखंड की पत्रकारिता, विनसर पब्लिशिंग कं0, देहरादून–उत्तराखंड (2015), पेज संख्या – 35

[xiii] रावत, जयसिंह : स्वाधीनताआन्दोलन में उत्तराखंड की पत्रकारिता, विनसर पब्लिशिंग कं0, देहरादून–उत्तराखंड (2015), पेज संख्या – 35

[xiv] झा, डॉ. प्रभाकर : राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बाल गंगाधर तिलक का योगदान, International Journal of Applied Research 2020; 6(11): ISSN Print: 2394-7500 ISSN Online: 2394-5869, पेज संख्या - 04-07,

[xv] https://www.hindujagruti.org/articles/41_lokmanya-tilak.html

[xvi] निर्मला : स्वतंत्रता संग्राम में बाल गंगाधर तिलक जी का योगदान, International Journal of Research in Social Sciences Vol. 11 Issue 06, June 2021, ISSN: 2249-2496, पेज संख्य - 103-107.

[xvii] https://www.hindujagruti.org/articles/41_lokmanya-tilak.html

[xviii] झा, डॉ. प्रभाकर : राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बाल गंगाधर तिलक का योगदान, International Journal of Applied Research 2020; 6(11): ISSN Print: 2394-7500 ISSN Online: 2394-5869, पेज संख्या - 04-07,

[xix] Ghodh, P. Renaissance and Reform in India, Calcutta Review, Page : 56 (1998)

[xx] https://archive.org/details/mainlajpatrai/mode/2up

[xxi] नौटियाल, राकेश मोहन एव अमित चमोली : **भारतीय प्रेस और ब्रिटिश नीति– एक अवलोकन, पुरुकला, Vol-31-Issue-39-May-2020, ISSN:0971-2143, पेज संख्या : 426–433.** https://www.researchgate.net/publication/353924432_indian_press_and_british_policiesek_avlokan

[xxii] रावत, जयसिंह : स्वाधीनताआन्दोलन में उत्तराखंड की पत्रकारिता, विनसर पब्लिशिंग कं0, देहरादून–उत्तराखंड (2015), पेज संख्या – 188.

[xxiii] नौटियाल, राकेश मोहन एव अमित चमोली : **भारतीय प्रेस और ब्रिटिश नीति– एक अवलोकन, पुरुकला, Vol-31-Issue-39-May-2020, ISSN:0971-2143, पेज संख्या : 426–433.** (Nautiyal)

[xxiv] डॉ. राजेश्वर : British Sarkar ka Bhartiya Press ke Prati Damnatmak Drashtikon (ब्रिटिश सरकार का भारतीय प्रेस के प्रति

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दमनात्मक दृष्टिकोण), INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH, Volume : 4 | Issue : 7 | July 2014 | ISSN - 2249-555X, पेज संख्या : 267–268.

[xxv] डॉ. राजेश्वर : British Sarkar ka Bhartiya Press ke Prati Damnatmak Drashtikon (ब्रिटिश सरकार का भारतीय प्रेस के प्रति दमनात्मक दृष्टिकोण), INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH, Volume : 4 | Issue : 7 | July 2014 | ISSN - 2249-555X, पेज संख्या : 267–268.

[xxvi] नौटियाल, राकेश मोहन एव अमित चमोली : **भारतीय प्रेस और ब्रिटिश नीति– एक अवलोकन, पुरुकला, Vol-31-Issue-39-May-2020, ISSN:0971-2143, पेज संख्या :** 426–433. **https://www.researchgate.net/publication/353924432_indian_press_and_british_policiesek_avlokan**

[xxvii] डॉ. राजेश्वर : British Sarkar ka Bhartiya Press ke Prati Damnatmak Drashtikon (ब्रिटिश सरकार का भारतीय प्रेस के प्रति दमनात्मक दृष्टिकोण), INDIAN JOURNAL OF APPLIED RESEARCH, Volume : 4 | Issue : 7 | July 2014 | ISSN - 2249-555X, पेज संख्या : 267–268.

[xxviii] सोनी, प्रोफेसर सुधीर : हिंदी पत्रकारिता में गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता, Interdisciplinary Horizons in Multidisciplinary Studies Research and Analysis – January 2024, eISSN: 2456-6470, पेज संख्या : 32-42.

[xxix] सोनी, प्रोफेसर सुधीर : हिंदी पत्रकारिता में गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता, Interdisciplinary Horizons in Multidisciplinary Studies Research and Analysis – January 2024, eISSN: 2456-6470, पेज संख्या : 32-42.

[xxx] सोनी, प्रोफेसर सुधीर : हिंदी पत्रकारिता में गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता, Interdisciplinary Horizons in Multidisciplinary Studies Research and Analysis – January 2024, eISSN: 2456-6470, पेज संख्या : 32-42.

[xxxi] चव्हाण, बलिराम शेशेराव एवं मोराले, डॉ. सुहास रंगनाथ : स्वधीनता आन्दोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान, Electronic International Interdisciplinary Research Journal , Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024, ISSN–2277- 8721, पेज संख्या : 63-68.

[xxxii] ग्रोवर, बी एल, अलका मेहता एवं यशपाल : आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस चाँद पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ – 316. ISBN : 978-93-528-3234-7.

[xxxiii] ग्रोवर, बी एल, अलका मेहता एवं यशपाल : आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन, एस चाँद पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ – 318. ISBN : 978-93-528-3234-7.

[xxxiv] https://www.ambedkaritetoday.com/2020/05/the-experiences-of-ambedkar-with-media.html

[xxxv] https://www.ambedkaritetoday.com/2020/05/the-experiences-of-ambedkar-with-media.html

[xxxvi] गोपाल, नृत्य एवं प्रोफेसर मनीषा शर्मा : डॉ. भीम राव अम्बेडकर की पत्रकारिता और दलित चेतना : एक अध्ययन, पुस्तक बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर : सामाजिक विचार एवं दर्शन सम्पादक : प्रो. तन्मय कुमार घोरे, डॉ. विमल राज ए, डॉ. अनिल कुमार एवं डॉ. नरेश कुमार सोनकर, रूपा प्रकाशन दिल्ली, ISBN : 978-93-86350-90-9, पेज : 44–50.

[xxxvii] गोपाल, नृत्य एवं प्रोफेसर मनीषा शर्मा : डॉ. भीम राव अम्बेडकर की पत्रकारिता और दलित चेतना : एक अध्ययन, पुस्तक बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर : सामाजिक विचार एवं दर्शन सम्पादक : प्रो. तन्मय कुमार घोरे, डॉ. विमल राज ए, डॉ. अनिल कुमार एवं डॉ. नरेश कुमार सोनकर, रूपा प्रकाशन दिल्ली, ISBN : 978-93-86350-90-9, पेज : 44–50.

[xxxviii] Hassan, J & Mannu, T : Maulana Abul Kalam Azad and Indian Freedom Movement: A Historical Study, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR) www.jetir.org, ISSN-2349-5162, PP : 1842-1848.

[xxxix] Hassan, J & Mannu, T : Maulana Abul Kalam Azad and Indian Freedom Movement: A Historical Study, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR) www.jetir.org, ISSN-2349-5162, PP : 1842-1848.

[xl] नौटियाल, राकेश मोहन एव अमित चमोली : **भारतीय प्रेस और ब्रिटिश नीति– एक अवलोकन, पुरुकला, Vol-31-Issue-39-May-2020, ISSN:0971-2143, पेज संख्या :** 426–433. **https://www.researchgate.net/publication/353924432_indian_press_and_british_policiesek_avlokan**

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. अमित चमोली इतिहास के विद्वान हैं और वर्तमान में ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर में विजिटिंग सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। उनकी शोध रुचियाँ इतिहास, अंतरराष्ट्रीय संबंधों, संस्कृति अध्यन भारतीय इतिहास, स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन से जुड़ी हैं। वे अकादमिक लेखन एवं शोध कार्यों में सक्रिय योगदान देते हैं।

© 2026 डॉ. राकेश मोहन नौटियाल, डॉ. पंकज पाण्डेय, डॉ. अमित चमोली. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/